10

छह घण्टे, 2

मत्ती 27:45-54; मरकुस 15:33-39; लूका 23:44-47; यूहन्ना 19:28-30

''जब यीशु ने वह सिरका लिया, तो कहा, पूरा हुआ और सिर झुकाकर प्राण त्याग दिए'' (यूहन्ना 19:30)।

अन्तिम तीन घण्टे

क्रूस पर यीशु के तीन घण्टे अपमाजनक, अप्राकृतिक अन्धेरे में बीते। हर ओर सन्नाटा छा गया। केवल तीन मर रहे लोगों का कराहना और गिर रही लहू की बूंदों की आवाज़ ही सुनाई देती थी।

अन्तिम तीन घण्टों में यीशु ने जल्दी-जल्दी चार वचन और कहे। उसने पुकारा, ''एली, एली, लमा शबक्तनी?'' जिसका अर्थ है ''हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया?'' (मत्ती 27:46; मरकुस 15:34)। परमेश्वर ने यीशु को पाप बनने दिया (2 कुरिन्थियों 5:21)। इस कारण परमेश्वर और यीशु अलग हो गए थे। कितना भयंकर दृश्य है! उफ़, पाप इतना भयानक है!

परमेश्वर के पुत्र को किसी भी मनुष्य को मिलने वाले दण्ड से अधिक पीड़ा परमेश्वर से जुदाई ने दी। यह वाक्य मनुष्य के खोए होने और उसकी लाचारी को दर्शाता है। यीशु की मृत्यु पाप पर ही नहीं, मौत पर भी विजय थी (इब्रानियों 2:14-18)। मसीही लोगों को मृत्यु से डरने की आवश्यकता नहीं थी। शैतान पराजित शत्रु है, जबकि पाप विजय पाया हुआ श्राप। मृत्यु अपना डंक खो चुकी है (1 कुरिन्थियों 15:21-26, 51-58)।

यह जानते हुए कि परमेश्वर की इच्छा पूर्ण हो रही है, यीशु ने कहा, ''मैं प्यासा हूं।'' यह यीशु के मनुष्य होने को दर्शाता है, जो उसका पांचवां वचन था। मनुष्य जाति की पुकार है, ''मैं प्यासा हूं'' (यूहन्ना 19:28, 29; KJV)। सस्ता दाखरस निकट से ही मिल गया। यीशु के लिए कुछ अच्छा तो हो रहा था, लेकिन यह बहुमूल्य नहीं था। ''जीवन का जल'' प्यासा था! (यूहन्ना 6:51-58)। यीशु ने अपने मनुष्य होने को खारिज करने के लिए अपनी ईश्वरीयता का इस्तेमाल नहीं किया।

क्रूस पर चढ़ाए जाने का अर्थ मनुष्य होने के सब अधिकार छीन लेना था। यशायाह ने लिखा, ''बहुत से लोग उसे देखकर चकित हुए क्योंकि उसका रूप यहां तक बिगड़ा हुआ था कि मनुष्य का सा न जान पड़ता था और उसकी सुन्दरता भी मनुष्य की सी न रह गई थी'' (यशायाह 52:14; CEV)। यहूदी लोग मसीहा की बाट जोह रहे थे, लेकिन जब वह आया तो उन्होंने उसे ठुकरा कर क्रूस पर चढ़ा दिया। जो उनके लिए आशा थी वही उनके लिए मौत बन गई। बिना मसीह के धर्म से खोखला और कुछ हो ही नहीं सकता।

परमेश्वर बदलता नहीं है। यीशु अर्थात परमेश्वर के पुत्र ने क्रूस पर से दिखाया कि परमेश्वर कैसा है। छह घण्टे क्रूस पर रहने के बाद उसने वही कहा, जो वह कह सकता था: ''पूरा हुआ है!'' (यूहन्ना 19:30)। ''काम पूरा हो गया है!'' अब परमेश्वर पापियों को धर्मी ठहरा कर भी धर्मी रह सकता है। यीशु यही कह रहा था कि उसने वह सब पूरा कर लिया जो हमारे छुटकारे के लिए परमेश्वर ने उसे करने के लिए भेजा था। स्वर्ग हमेशा रहेगा; परमेश्वर ने हमारे लिए जो किया उसे समझने के आरम्भ के लिए पूरा अनादिकाल लग जाएगा। परमेश्वर के साथ होने पर हमें उसके स्वरूप की और समझ आएगी। यीशु वहां ''मेमने'' के रूप में होगा (जैसा प्रकाशितवाक्य की पूरी पुस्तक में दिखाया गया है)। पूरा अनादिकाल घोषणा करेगा कि यीशु के ''पूरा हुआ है'' कहने का क्या अर्थ था।

जिसे मनुष्य पूरा नहीं कर सकता था, वह यीशु ने किया। शैतान (दोष लगाने वाले) का मुंह बंद कर दिया गया (प्रकाशितवाक्य 12:9-11)। मूसा की पुरानी व्यवस्था को क्रूस पर कीलों से ठोंक दिया गया (इब्रानियों 8:6-13; 9:12-18; 10:4-14, 18-31)। आज तक के सबसे महान शब्द थे ''पूरा हुआ है!''

यीशु ने क्रूस से अन्तिम वचन ऊंचे स्वर में कहा, ''हे पिता, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूं: और यह कहकर प्राण छोड़ दिए'' (लूका 23:46)। अद्‌भुत! पुकारने के लिए उसे बड़ा प्रयास करना पड़ा। वह अपने अन्तिम शब्द सबको सुनाना चाहता था। ध्यान दें कि परमेश्वर को उसने अपनी देह या अपनी सांसें नहीं सौंपी। उसने आत्मा सौंपी। परमेश्वर के पुत्र यीशु ने मरना चुना था!

यीशु ने हमारे उद्धार के लिए अपना सब कुछ दे दिया! उसके अनुयायियों को भी त्यागपूर्ण जीवन बिताना आवश्यक है। पृथ्वी पर कलीसिया ही वह संस्था है, जो विशेष रूप से उनके हित के लिए काम करती है, जो इसके सदस्य नहीं हैं।

क्रूस की महिमा

यीशु ने अपनी महिमा पाने के बारे में उतना बताया, जितना अपने क्रूस दिए जाने के बारे में नहीं बताया। उसने कहा, ''हे पिता, वह घड़ी आ पहुंची, अपने पुत्र की महिमा कर, कि पुत्र भी तेरी महिमा करे''; ''अब, हे पिता, तू अपने साथ मेरी महिमा उस महिमा से कर जो जगत के होने से पहिले, मेरी तेरे साथ थी'' (17:1, 5)। हमारे परमेश्वर ने मृत्यु के सबसे अमानवीय ढंग को सबसे बड़ी प्रेरणा में बदल दिया!

परमेश्वर के ''हमारे ऊपर'' होने को समझे बिना परमेश्वर के ''हमारे अन्दर'' या ''हमारे निकट'' होने की बात न करें। परमेश्वर के दो सिंहासन हैं, एक तो सबसे ऊपर स्वर्ग में और दूसरा सबसे नीचे हमारे मन में। क्रूस को समझे बिना हम मसीह को समझ नहीं सकते। महिमा योग्य एकमात्र व्यक्ति ने सारी महिमा अपने पिता को दी। हम मसीह के क्रूस को छोड़ किसी और बात की बड़ाई न करें (गलातियों 6:14)।

क्रूस ...
और मार्ग ही नहीं है!